नवाचारी कृषक समागम: कृषक नेतृत्व प्रसार हेतु रणनीति

24 सितंबर 2015 भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित किसान के नेतृत्व में प्रसार के लिए एक रणनीति तैयार करने के लिए दिन भर चली चर्चा में 13 राज्यों के 85 नवोन्मेषी किसानों ने भाग लिया। इस समागम में नवोन्मेषी कृषकों के साथ वैज्ञानिकों, शोध प्रबंधकों तथा कृषि उत्पाद से जुड़ी विपणन एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस पहल द्वारा किसानों की अभिनव क्षमताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने, प्रसार क्षमता वाले किसान नेतृत आविष्कारों की पहचान करने और कृषि और संबद्ध क्षेत्र के क्षेत्र में किसानों के नेतृत्व में हुए नवाचारों के अनुभवों को साझा करना मुख्य उद्देश्य रहा । इस विषय पर जौर दिया गया कि नवोन्मेष की पहचान अपने आप में एक अंत नहीं है वरन इन किसानों के क्रिया कलापों में सुधार लाने, स्थायी आजीविका के लिए उनकी सहायता करने और छोटे किसानों में नवोन्मेष की भावना पैदा करने पर जौर दिया गया । डॉक्टर ए के सिंह (उप महानिदेशक कृषि प्रसार) इस मौके पर मुख्य अतिथि रहे और डॉक्टर त्रिलोचन महापात्र (निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । डॉ महापात्रा ने नवोन्मेशी किसानों की अपनी आपस मे नेटवर्किंग और वैज्ञानिको के साथ गठजोड़ विकसित करने के लिए प्रयासो पर ज़ोर दिया| मुख्य अतिथि ने समागम के प्रासंगिक विषय के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की सराहना की और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के राजदूत के रूप में अन्वेषक किसानों का उपयोग करने की आवश्यकता को महत्ता दी।

डॉ महापात्रा ने इन सफल कृषक उद्यमियों की सफलता की कहानियों को प्रकाशित करने पर ज़ोर दिया जिसको पढ़ कर अन्य किसान भी प्रेरित हो| यह निर्णय लिया गया की संस्थान में हर साल किसान अन्वेषक दिवस मनाया जाएगा| डॉ जे0 पी0 शर्मा, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने कृषि विकास में इन नवोन्मेषी किसानों के योगदान को सराहा| यह भी निर्णय लिया गया कि परिषद के कार्यक्रम 'मेरा गांव मेरा गौरव' के तहत, चार वैज्ञानिकों (अंतर अनुशासनात्मक) के साथ उस टीम मे एक नवोन्मेषी कृषक एक किसान वैज्ञानिक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए| हरेक नवोन्मेषी किसान को कम से कम दस और किसानों को अपना कर उनको सभी प्रकार की सलाह प्रदान कर प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों का प्रभावी हस्तांतरण करना चाहिए |एमएससी और पीएचडी छात्रों को भी अपने शोध कार्यक्रम के तहत नवोन्मेषी किसानों के साथ समय बिता कर उनसे सीख लेनी चाहिए| नवोन्मेषी किसानों को दूरदर्शन और अन्य मीडिया में भी पर्याप्त कवरेज देना चाहिए। यह भी निर्णय लिया गया कि इन नवोन्मेषी किसानो की एक डायरेक्टरी तैयार की जाएगी जिसमे उनके सभी संपर्क विवरण हो । इसके अलावा, राज्य कृषि विभाग के साथ नियमित रूप से वार्ताओं का आयोजन किया जाए जिसमे नवोन्मेषी किसानों, संस्थान के वैज्ञानिको और अन्य हितधारकों भाग ले| इन किसानों का एक मजबूत नेटवर्क विकसित करने के लिए आईसीटी व सोशल मीडिया की पूरी क्षमता का उपयोग करना चाहिए| डॉ आर एन पडारिया और डॉ रश्मि सिंह प्रधान वैज्ञानिक ने इस समागम का समायोजन किया व डॉ प्रेमलता सिंह, कृषि प्रसार संभाध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापन किया।